www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 11, 12-14

Article ID: 228

सरसों की फसल में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन

अरविन्द कुमार[1*], सूरज सिंह[2], अनुज कुमार[3]

[1,2](शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या उत्तर प्रदेश

[3](शोध छात्र) चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपूर उत्तर प्रदेश

सरसों एक तेल वाली फसल है इसकी बुवाई रबी मौसम में करते हैं | भारत में राजस्थान के बाद सरसों के उत्पादन के लिए उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है। मध्य प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात आदि राज्यों में सरसों की खेती की जाती है। इसका वैज्ञानिक नाम ब्रेसिका कम्प्रेसटिस है | सरसों के कई प्रकार होते हैं जैसे पीली सरसों, काली सरसों और भूरी सरसों | इसकी उपज के लिए दोमट मिट्टी उपुक्त है | इसकी उंचाई 1 से 3 फिट होती है | इसके तने में शाखा-प्रशाखा होते हैं | इसमें पीले रंग के सम्पूर्ण फूल लगते हैं जो तनें और शाखाओं के उपरी भाग पर स्थित होते हैं | सरसों के बीज में 33 से 35 प्रतिशत तेल भी निकलता है | सरसों के तेल में आइसोथायो सायनेट होता है | सर्दियों में इसका साग भी लोग खूब चाओ से खाते हैं | इसके अलावा सरसों के बीजों को मसालों में भी प्रयोग करते हैं | सरसों में कीट पत्तंगों से अधिक नुकसान होता है जैसे आरा मक्खी, चित्रित बग माहूँ आदि |

प्रमुख कीट-

आरा मक्खी-

पहचान एवं हानि- इस कीट की सुड़ियाँ काले स्लेटी रंग की होती हैं | मादा वयस्क का पिछला भाग काफी विकसित एवं आरी जैसा होता है जिससे छेद करके पत्तियों में अंडे देती है | नवजात इल्ली हरे रंग की होती है। इल्ली 16-18 मिमि लम्ब्बी होती है। इसके 8 जोड़ी पैर होते हैं। इसका रंग गहरा होते जाता है | शरीर का पिछला भाग पर पांच काली धारियां होती है। नई पत्तियों में छेद कर खाती हैं | इस कीट का लार्वा सूर्यास्त के बाद एवं प्रात: काल में पत्तीयों को खाता है एवं दिन में मिट्टी के ढेलों में छिपा रहता है | यह वानस्पति अवस्था पर 1 से 2 सुड़ियाँ प्रति पौधा देखने को मिलती हैं | यह पत्तियों के किनारे से अथवा पत्तियों में छेद कर खाती हैं | इनके तेज प्रकोप से पूरा पौधा पत्ती विहिन् हो जाता है |

आरा मक्खी

नियंत्रण के उपाय-

- गर्मी में गहरी जुताई करनी चाइये |
- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाइये |
- आरा मक्खी की सुड़ियों को प्रातः काल इकट्ठा क्र के नस्त क्र देना चाइये |
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाइये |
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतशत डब्लू. जी. 150 ग्राम प्रति हेक्टेयर 600 से 700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें |

चित्रित बग-

पहचान एवं हानि- इस कीट के शिशु एवं प्रोढ़ चमकीले काले नारंगी एवं लाल रंग के चकत्ते उक्त होते हैं | शिशु एवं प्रोढ़ पत्तियों, शाखाओं तथा फूलों एवं कलियों का रस चूसते हैं जिससे प्रभाभित पत्तियां किनारों से सूख कर गिर जातीं हैं एवं प्रभाभित फलियों में दानें कम बनते हैं|

चित्रित बग

नियंत्रण के उपाय-

- गर्मी में गहरी जुताई करनी चाइये|
- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाइये|
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाइये|
- थायमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू. जी. 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 600 से 750 लीटर पानी में घोल के 10 से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें|

बालदार सूड़ी-

पहचान एवं हानि- इस कीट की तितली भूरे रंग की होती है, जो पत्तियों की निचली सतह पर समूह में हल्के पीले रंग के अण्डे देती है। पूर्ण विकसित सूड़ियों का आकार 3-5 सेमी. लम्बा होता है | यह सूड़ी काले एवं नारंगी रंग की होती है तथा पूरा शरीर बालों से ढाका रहता है | इनके प्रकोप से वानस्पतिक अवस्था में 10 से 15 प्रतिशत प्रकोपित पत्तियाँ दिखाई देती हैं | यह झुण्ड में रहकर पत्तियों को खुरचकर खाती हैं जिससे पौधे पत्ती विहीन हो जाता है|

बालदार सूड़ी

नियंत्रण के उपाय-

- गर्मी में गहरी जुताई करनी चाइये|
- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाइये|
- डायमेथोयेट 30 प्रतिशत ई. सी. 500 मिली प्रति हेक्टेयर 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें|

माहूँ या चेम्प्पा-

पहचान एवं हानि- इस कीट की शिशु एवं प्रोढ पीलापन लिए हुये हरे रंग के होते हैं | यह पंखहीन एवं आकर में बहुत छोटे होते हैं | यह वानस्पतिक अवस्था से लेकर फूल व फली आने तक पाय जाते हैं | यह पत्तियों का रस चूस कर हानि पहुचाते हैं जिससे पौधा मुरझा हुआ दिखाई देता है|

माहूँ या चेम्प्पा एवं प्रकोपित पौधा

नियंत्रण के उपाय-

- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाइये|
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाइये|
- माहूँ उक्त पातियों को तोड़ कर मिट्टी में दवा देना चाइये|
- पीले स्टिकी ट्रैप का प्रयोग करना चाइये|
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्लू, जी, 150 ग्राम प्रति हेक्टेयर 600 से 700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें|